पाठ 17

रहिमन विलास

● रहीम

आइए, सीखें : रहीम के दोहों द्वारा लोक व्यवहार व नीति का ज्ञान प्राप्त करना। ♦ वर्तनी शुद्ध करना।

जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय
बारे उजियारो करै, बढ़े अँधेरो होय॥ 1॥

अमृत ऐसे वचन में, रहिमन रिस की गाँस।
जैसे मिसिरिहु में मिली, निरस बाँस की फाँस॥ 2॥

रहिमन अब वे बिरछ कहँ जिनकी छाँह गंभीर।
बागन बिच-बिच देखियत, सेंहुड़ कुंज करीर॥ 3॥

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गई सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर गई, जूती खात कपाल॥ 4॥

तन रहीम है कर्म बस, मन राखो ओहि ओर।
जल में उलटी नाव ज्यों, खैंचत गुन के जोर॥ 5॥

समय लाभ सम लाभ नहिं, समय चूक सम चूक।
चतुरन चित रहिमन लगी, समय चूक की हूक॥6॥

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
विपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत॥ 7॥

दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोय।
जो रहीम दीनहि लखै, दीनबंधु सम होय॥ 8॥

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछत कौन॥ 9॥

बिपति भए धन ना रहे, रहे जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, ज्यों रहीम भए भोर॥ 10॥

शिक्षण संकेत -

♦ पंक्तियों को हाव-भाव तथा लय के साथ पढ़ें। ♦ नीति की शिक्षा देने वाली अन्य कवियों की पंक्तियाँ भी सुनाएँ। ♦ रहीम के दोहों में निहित लोक व्यवहार की जानकारी बच्चों को दें। ♦ कठिन शब्दों के अर्थ बच्चों के सहयोग से स्पष्ट करें।

नए शब्द

कुल = वंश, खानदान। **बारे** – 1. (दीप के संदर्भ में) जलाने पर 2. (कपूत के संदर्भ में) बालापन या लड़कपन में । **उजियारो** = प्रकाश । **रिस की गाँस** = क्रोध की चुभन। **मिसिरिहु में** = मिश्री में। **सेंहुड़** = थूहर। **कुंज–लता** = झाड़ियों के झुंड । **करीर** = करील नामक काँटेदार झाड़ी। **ओहि ओर** = उसी तरफ। **उलटी नाव** = धारा के विपरीत नाव को चलाने हेतु। **पावस** = वर्षा। **कोइल** = कोयल। **दादुर** = मेढक ।

अनुभव विस्तार

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(क) सही जोड़ी बनाइए –

रहीमन अब वे बिरछ कहँ	–	जूती खात कपाल
आपु तो कहि भीतर गई	–	समय चूक की हूक
चतुरन चित रहिमन लगी	–	ते ही साँचे मीत
विपति कसौटी जे कसे	–	जिनकी छाँह गंभीर

(ख) सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(अ) .....ऐसे वचन में रहिमन रिस की गाँस। (अमृत,विष)

(ब) चतुरन चित रहिमन लगी.....चूक की हूक। (समय, काल)

(स) .....देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन। (पावस, ग्रीष्म)

(द) जल में उलटी नाव ज्यों, खैंचत..... के जोर। (अवगुन, गुन)

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) कपूत की गति किसके समान होती है?

(ब) रहीम के अनुसार अब कौन से वृक्ष दिखाई नहीं देते?

(स) रहीम ने सबसे बड़ा लाभ किसे माना है?

(द) दीनबंधु के समान कौन हो जाता है?

(ई) पावस आने पर कौन मौन साध लेता है?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न–

(अ) रहीम 'रिस की गाँस' के विषय में क्या कहते हैं?

(ब) 'जीभ के बावलेपन' का क्या दुष्परिणाम होता है?

(स) रहीम ने तन की तुलना नाव से क्यों की है?

(द) कवि के अनुसार 'सच्चा मीत' कौन है?

4.. निम्नलिखित दोहे के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं, स्पष्ट कीजिए–

विपति भए धन ना रहे, रहे जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं, ज्यों रहीम भए भोर।।

भाषा की बात–

1. बोलिए और लिखिए–

मिसिरिहु, बिरछ, दीनबंधु, सेंहुड़, वक्ता,

2. निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी खाली स्थान में लिखिए–

विरछ	वृक्ष	विरक्छ .....
निरस,	निरीस	नीरस .....
संपत्ति	संपनी	संपति .....
बाँस	वाँस	बासँ .....

3 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

उपकार	–	अपकार
अमृत	–	.....
लाभ	–	.....
सबल	–	.....
अनुरक्ति	–	.....
कपूत	–	.....

4 **निम्नलिखित तत्सम एवं तद्भव शब्दों को पहचानकर जोड़ी बनाइए-**

अँधरो, दीप, स्वर्ग, जीभ, कुपुत्र, दुग्ध, दीया, अंधकार, कपूत, दूध, जिह्वा, सरग

अब करने की बारी

- रहीम की ही तरह तुलसी, कबीर, बिहारी आदि कवियों के नीति के दोहों का संकलन उत्तर पुस्तिका में कीजिए।
- अपने विद्यालय की बालसभा में दोहों का सस्वर पाठ कीजिए।
- नीति के दोहों से मिलने वाली सीख को 'सूक्ति' रूप में लिखकर अपनी कक्षा में लगाइए ।